शत्रु संहार और धन-समृद्धिदायक

नीम के गणपति

श्वेतार्क गणपति की प्रतिमा

नीम के गणपति-

नीम का वृक्ष घर में होना शुभता का प्रतीक माना गया है। जहां नीम होने से रोग-शोक घर से कोसों दूर रहते हैं वहीं नीम के वृक्ष होने से देवताओं का वास भी घर में रहता है। जिस घर में नीम का वृक्ष होता है वह घर धन-धान्य से परिपूर्ण होता है। वहाँ लक्ष्मी का निवास होता है।

भगवान् श्री गणेश की यह बड़ी अद्‌भुत विशेषता है कि उनका स्मरण करते ही सब विघ्न-बाधाएँ दूर हो जाती हैं और सब कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाते हैं। भगवान गणपति शीघ्र प्रसन्न होने वाले और इच्छानुकूल वर देने वाले देवता हैं। इनको प्रसन्न करने के लिये किसी विशेष कठिन तपस्या से नहीं गुजरना पड़ता।

ऐसे में यदि भगवान गणपति की प्रतिमा नीम की लकड़ी से निर्मित हो तो यह सोने पे सुहागा जैसी बात है। नीम जहां आपके घर के वातावरण को शुद्ध एवं सात्विक बनाये रखता है, वहीं भगवान गणपति की प्रतिमा आपकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिये उपलब्ध रहती है। शत्रुओं का नाश होता है और विपत्तियों का नाश होता है।

► किसी शुभ दिन, शुभ मुहूर्त्त या गणेश चतुर्थी के विशेष अवसर पर नीम की लकड़ी से बनी प्राण-प्रतिष्ठित गणेश प्रतिमा स्थापित करने से शत्रु वश में हो जाते हैं और घोर विपत्तियों में भगवान गणेश हमारी रक्षा करते हैं।

► अगर इस प्रतिमा की पूजा करके साधक घर से निकले तो संत्री से लेकर अधिकारी तक उससे प्रभावित हो जाते हैं और साधक के मन में उठने वाली कामना पूर्ण होती है।

► कहा जाता है कि नीम की लकड़ी की मूर्ति बनाकर चतुर्थी दीपावली की रात्रि में लाल पुष्प एवं चंदन से पूजन करें तथा 1 हजार जप करके रात्रि में उस प्रतिमा को नदी में विसर्जित कर दें तो भगवान् गणपति साधक के अभीष्ट कार्य को स्वप्न में बतला देते हैं।

► नीम से बनी गणेश प्रतिमा घर में स्थापित कर रोजाना नित्य धूप-दीप करने से जटिल से जटिल शत्रु भी पीछे हट जाता है या मैदान छोड़कर भाग जाता है।

➢ नीम की प्रतिमा का उक्त रीति से पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है।

► नीम की लकड़ी से निर्मित प्रतिमा पर लाल चंदन एवं लाल फूलों से विधिवत पूजन कर उसे मद्यपात्र में रखकर मंत्र जप करने से 1 सप्ताह के भीतर सभी घोर उपद्रव नष्ट हो जाते हैं, शत्रु वश में हो जाते हैं और धन-संपत्ति की वृद्धि होती है।

मंत्र- ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने
आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रीं हूं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा

तो आज ही इस प्रतिमा को अपने घर में स्थापित करें और देखें कि किस प्रकार भगवान गणपति की कृपा दृष्टि आप पर स्थिर होती है और आपके सभी कार्य सफल होते हैं। आपकी प्रत्येक अभिलाषा आपको पूर्ण होती दिखाई देगी।

नीम के गणपति न्यौछावर राशि 2500/-

श्वेतार्क गणपति-

तान्त्रिक-विधि से वह मूल प्राप्त करके घर में स्थापित किया जाये तथा उसका दैनिक-पूजन हों, तो उस घर-परिवार को श्री-समृद्धि से सम्पन्न करके साधक की समस्त भौतिक-बाधाओं का शमन कर देती है। परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि 'श्वेतार्क मूल' पूर्णतया शास्त्रीय ढ़ंग से प्राप्त की जाए और उसका पूजन हो। आईये जाने श्वेतार्क के महात्म्य को...!!

श्वेतार्क गणपति का उपयोग रविपुष्य, दीपावली, धनतेरस, के शुभ दिन ही प्रारम्भ करना चाहिए।

पूजन विधि- श्वेतार्क-मूल प्राप्त हो जाने पर उसे साफ करके शुद्ध जल से स्नान करायें (धोलें) फिर लाल कपड़े पर स्थापित करके उसकी पूजा करें। पूजा में लाल चन्दन, अक्षत, लाल पुष्प, सिन्दूर का प्रयोग किया जाता है। धूप-दीप देकर, नैवेद्य के साथ कोई सिक्का भी अर्पित करें। इसके पश्चात् गणेशजी का नीचे लिखें मंत्रों में से कोई मंत्र जपें। (1) ऊँ गं गणपतये नमः (2) ऊँ ग्लौं गणपतये नमः(3) श्री गणेशाय नमः (4) ऊँ भालचन्द्राय नमः (5) ऊँ एकदन्ताय नमः (6) ऊँ लम्बोदराय नमः। श्वेतार्क-मूल' को साक्षात् गणेशजी मानकर, जो व्यक्ति यह साधना करता है, वह ज्ञान, सम्पत्ति, और सुरक्षा और निर्विघ्न-शान्ति प्राप्त करता है।

(1) श्वेतार्क गणपति के सामने यदि ''गं गणपतयै नमः'' मंत्र की एक माला मंत्र जप किया जाये, तो निश्चय ही उसके जीवन में उन्नति होती रहती है।

(2) धन-धान्य सुख-सौभाग्य ऐश्वर्य और प्रसन्नता के लिये श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह होता ही नहीं है, जिसे घर में स्थापित किया जाये।

(3) इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति जीवन के समस्त कर्जों से छुटकारा पा लेता है। इस साधना हेतु साधक को सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा में मुंह करके बैठना चाहिए। सामने बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर चावल की ढेरी करें फिर उस पर ''श्वेतार्क गणपति'' स्थापित कर कुंकुम, चावल, मोली से पूजा करें व धूप-दीप करें। गणपति को सिंदूर अर्पित करें। फिर प्रवाल की माला से निम्न जाप करें।

मंत्र-

ॐ नमो विघ्नहराय गं गणपतये नमः।।

इस मंत्र की 5 माला जाप करे एवं सामग्री को (श्वेतार्क गणपति एवं मूंगे की माला) लाल कपड़े की पोटली में बांध लें और अगले दिन पोटली गणपति मंदिर में जाकर गणेशजी के चरणों में रखकर दरिद्रनाश की प्रार्थना करें व घर चले आये।

(4) श्वेतार्क गणपति के मूल को लाकर जलाया जाय और उसकी राख से दीपावली के दिन सभी को तिलक किया तो वह तिलक लक्ष्मी को आकर्षित करने वाला होता है।

श्वेतार्क गणपति 1100 रु. से प्रारम्भ तथा प्रवाल माला 450 रु./--